उद्योगों की दिवाली, हर जिले पर बरस रहीं लक्ष्मी

छोटे कारीगरों व छोटी इकाइयों के पास हैं 10 हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर, सरकार को दो लाख करोड़ के कारोबार का अनुमान

25,000
करोड़ के राजस्व का अनुमान उत्तर प्रदेश सरकार को

अभिषेक गुप्ता

लखनऊ। धार्मिक आयोजन कैसे किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था की गेंद बनते हैं, इसका साक्षात प्रमाण है प्रयागराज महाकुंभ। लगभग 40 करोड़ श्रद्धालुओं के स्वागत को तैयार महाकुंभ में सभी 75 जिलों के कारीगरों से लेकर उद्यमी तक प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े हैं। सिर्फ 45 दिन में 35 देशों के बराबर आबादी आकर्षित करने वाला यह महा आयोजन उद्योगों के लिए दिवाली से कम नहीं है। अकेले 10 हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर छोटे कारीगरों और छोटी इकाइयों के पास हैं।

महाकुंभ में राज्य सरकार का 7,500 करोड़ रुपये का बजट है। इस खर्च से करीब 25 हजार करोड़ रुपये के राजस्व और दो लाख करोड़ रुपये के कारोबार का अनुमान है। महाकुंभ ने जूता-चप्पल सिलने वाले कारीगर से लेकर हेलिकॉप्टर चलाने वाली कंपनी तक के लिए कमाई के रास्ते खोले हैं। इसके अतिरिक्त किराने सामान से 4000 करोड़ रुपये, खाद्य तेल से 2500 करोड़, सब्जियों से 2200 करोड़, बिस्तर, गद्दे, चादर, तकिया व कंबल आदि से 900 करोड़, दूध व अन्य डेयरी उत्पाद से 4200 करोड़, हॉस्पिटैलिटी से 2500 करोड़ और अन्य क्षेत्रों से कम से कम 3000 करोड़ रुपये की कमाई होगी।

कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के यूपी प्रमुख महेंद्र गोयल के मुताबिक महाकुंभ के दौरान श्रद्धालुओं की बुनियादी जरूरत से जुड़ी चीजों से ही 17,310 करोड़ का राजस्व मिलेगा। स्मॉल इंडस्ट्रीज एंड मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन के मुताबिक पूजा सामग्री, कपड़े, स्मृति चिह्नों की खरीदारी में हस्तशिल्प, रेडीमेड और खाद्य पदार्थों का व्यापार फल-फूल रहा है। इनका लाभ हर जिले को हस्तशिल्पियों को मिल रहा है। तो कपड़े में गौतमबुद्धनगर, कानपुर, गाजियाबाद, बनारस, मिर्जापुर और उन्नाव के कारीगरों व उद्यमियों को सीधा लाभ मिला है।

भीड़ प्रबंधन, स्वच्छता, बिजली व पानी की आपूर्ति और सुरक्षा व्यवस्था ने गोरखपुर, मेरठ, झांसी, लखनऊ, सीतापुर, कन्नौज, इटावा और झांसी को मालामाल किया है। पर्यटन, परिवहन, पानी, पूजापाट की सामग्री आदि ने मथुरा, वाराणसी, कानपुर, हरदोई, फर्रुखाबाद, कानपुर देहात और बागपत को करोड़ों रुपये का काम दिया है। प्रदेश के 82 बड़े ब्रांड्स और देश के 178 ब्रांड्स ने भी अस्थायी रूप से 9000 युवाओं को रोजगार दिया है। टेंट सिटी ने स्थायी रूप से 2000 से ज्यादा रोजगार दिए हैं।

महाकुंभ ने खोले हर जिले के लिए रोजगार और आय के रास्ते

- इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज सिंघल के मुताबिक महाकुंभ ने हर जिले के लिए रोजगार और आय के रास्ते खोले हैं। होटल, रेस्टोरेंट, खाने-पीने के खोमचे, हवाई यात्रा, रेल और सड़क परिवहन की मांग 80 गुना तक बढ़ेगी। वहीं, निर्माण, सुरक्षा, सफाई व स्वास्थ्य सेवाओं में लगभग 10 हजार श्रमिकों व अकुशल कारीगरों को रोजगार मिलेगा। इनकी सर्वाधिक आपूर्ति गोंडा, देवरिया, बलिया, महराजगंज, कुशीनगर, कानपुर, कौशांबी, चित्रकूट, महोबा, बांदा, हमीरपुर और गाजीपुर से हो रही है।

महाकुंभ त्रिवेणी पर श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ रहा है। -एएनआई

आस्था से लेकर अर्थव्यवस्था तक धार्मिक पर्यटन का विस्तार

लखनऊ। पंजाब, हरियाणा और दिल्ली चैंबर ऑफ कॉमर्स की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 60 फीसदी से अधिक घरेलू यात्राएं धार्मिक स्थलों की होती हैं। धार्मिक पर्यटन आर्थिक उन्नति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महाकुंभ तो विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है। उत्तर प्रदेश का देश ही नहीं दुनिया में धार्मिक लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। देश और दुनिया के हर हिंदू के आस्था के केंद्र भगवान श्रीराम की अयोध्या, राधा-कृष्ण ने जिस ब्रज भूमि पर रास रचाए थे, कृष्ण बाल लीलाओं के साथ जहां खेले-कूदे, वह मथुरा, बरसाना, नंदगांव, गोवर्धन भी उत्तर प्रदेश में ही है।

- वनवास के दौरान भगवान श्रीराम ने पत्नी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ जहां सर्वाधिक समय गुजारा था, वह चित्रकूट भी उत्तर प्रदेश में है। इसके अलावा भी प्रदेश के हर विधानसभा क्षेत्र में ऐसे धार्मिक स्थल हैं जहां प्रतिदिन सैकड़ों लोग जाते हैं। खास अवसर या दिन को ये संख्या हजारों में पहुंच जाती है।
- बड़े धार्मिक स्थलों के विकास के लिए योगी सरकार ने पर्याप्त धनराशि स्वीकृत की है। इसमें केंद्र सरकार भी मददगार है। अयोध्या में रामलला के दिव्य एवं भव्य मंदिर का निर्माण पूर्णता की ओर है। वर्ष 2025 में यह पूरा हो जाएगा। इसके लिए हजारों करोड़ की लागत से करीब तीन दर्जन परियोजनाओं पर काम चल रहा।
- कुछ काम पूरे हो गए बाकी पूर्णता की ओर हैं। इसी क्रम में काशी में श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के निर्माण के बाद वहां आने वाले पर्यटकों की संख्या साल में 10 करोड़ के करीब हो गई है। विंध्यधाम, नाथ कॉरिडोर का काम प्रगति पर है। ब्यूरो